# 4 उत्साह, अट नहीं रही है

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1899-1961)

## उत्साह

### पाठ-परिचय :

उत्साह एक आह्वान गीत है, जो बादल को संबोधित है। बादल निराला का प्रिय विषय है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ यही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना को संचय करने वाला भी है। कवि जीवन को व्यापक और समग्र दृष्टि से देखता है। कविता में ललित कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों हैं। सामाजिक क्रांति या बदलाव में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, निराला इसे 'नवजीवन' और 'नूतन कविता' के संदर्भों में देखते हैं।

### प्रतिपाद्य विषय

प्रस्तुत कविता में कवि ने बादल का आह्वान किया है। कवि ने बादल के अनेक रूप प्रस्तुत किए हैं। कभी उसके घूमने और चंचलता का चित्रण करता है, तो कभी घनघोर गर्जन का। वास्तव में कवि बादलों से लोक-मंगलकारी रूप धारण करने की प्रार्थना करता है। कवि बादलों को संबोधित करते हुए कहता है कि हे बादल! घनघोर गर्जना कर सारे आकाश को भर दो, अर्थात् गगन का कोई कोना कठोर गर्जना से अछूता न रह जाए। गर्जना करते हुए पृथ्वी पर जल बरसाओ। आकाश में फैले हुए बादल अपनी कोमलता के कारण सुंदर और मृदुल हैं। काली-काली बदलियाँ काले घुँघराले बालों के समान शोभायमान हो रही हैं। बादल बच्चों की कल्पना के समान पवित्र व मृदुल हैं। बाल-कल्पना से पालित बादल हैं। बादलों के बीच चमकती बिजली को देख कवि को लगता है कि जैसे बादलों ने अपने हृदय में बिजली की छवि को अब तक छिपाया हुआ था। बादल नव-जीवन देने वाले हैं। कवि निराला अपने जीवन में भी बादल की गर्जना जैसी निडरता, बिजली जैसी ओजस्विता और शीतलता प्रदान करने वाली परोपकारिता चाहता है। कवि बादल से आग्रह करता है कि अपनी वज्र जैसी कठोरता को छिपा कर एक नवीन कविता से आकाश के जीवन को भर दे। कवि का मानना है कि केवल कोमलता से काम चलने वाला नहीं है। बादलों की भाँति वे भी नित नई-नई कविता कहने के लिए मचल रहे हैं, क्योंकि नवीनता लाने के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति आवश्यक होती है।

बादल बरसने के लिए व्याकुल थे, अनमने थे। विश्व के लोग (जनमानस) प्यासे हैं, ताप व गरमी के कारण तप्त प्यासे जन-मानस की तुम्हारी ही तरफ है। वह तुम्हारी ही आस लगाए बैठे है, अर्थात् क्रांति के वाहक बादल अज्ञात दिशा से अंतहीन आकाश से जल बरसाकर इस प्यासी धरती को शीतलता प्रदान करते हैं। तपित धरती को जल बरसाकर शीतल कर दो, अर्थात् एक ओर बादल अपने शीतल जल से जन-जन की प्यास शांत करता है तो दूसरी ओर यही बादल, जो क्रांति का प्रतीक है, नई कल्पना, नवजीवन के अंकुर उगाएगा—इसी से क्रांति का सूत्रपात होगा।

### काव्य-सौंदर्य

- संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।
- 'बाल कल्पना के-से पाले' में उपमा अलंकार है।
- 'घेर-घेर', 'ललित-ललित' तथा 'विकल-विकल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- खड़ी बोली व ओज गुण है।
- प्रतीकात्मक शैली है।
- 'काले घुँघराले' में मानवीकरण अलंकार है।
- 'घेर घेर घोर', 'आए अज्ञात' में अनुप्रास अलंकार है।
- संगीतात्मकता है।
- आह्वान गीत संबोधन शैली में है।
- नाद-सौंदर्य—ध्वनिवाचक शब्दों का प्रयोग है।

## समेटिव असेसमेंट

### काव्यबोध पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. बादल, गरजो!–
   घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
   ललित ललित, काले घुँघराले,
   बाल कल्पना के-से पाले,
   विद्युत-छवि उर में, कवि नवजीवन वाले!
   वज्र छिपा, नूतन कविता
   फिर भर दो–
   बादल, गरजो!

Scanned with CamScanner

(क) कवि किसको आह्वान कर रहा है और क्यों?

(ख) आकाश में फैले बादल कैसे लग रहे हैं?

(ग) कवि बादल से समस्त आकाश को घेर लेने को क्यों कहता है?

(घ) 'बाल कल्पना के-से पाले' में कौन-सा अलंकार है?

(ङ) उपर्युक्त पद्यांश में कौन-सी भाषा है?

2. विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो—
बादल, गरजो!

(क) 'निदाघ' में जन-मन की दशा कैसी थी?

(ख) काव्यांश में कवि बादलों से क्या कामना करता है?

(ग) कवि यहाँ बादल से गर्जना करने के लिए क्यों कहता है?

## लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'उत्साह' कविता किस प्रकार की रचना है?
2. 'विद्युत छवि उर में' का भाव-सौंदर्य लिखिए।
3. कवि के अनुसार 'बादल' किसे और कब शांति देते हैं?
4. 'उत्साह' कविता की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।
5. 'उत्साह' कविता में किसे संबोधित किया गया है? उसके लिए कौन-सा शब्द प्रयोग हुआ है?
6. कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है? *[NCERT]*
7. शब्दों का ऐसा प्रयोग, जिसमें कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। 'उत्साह' कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं, जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है? छाँटकर लिखिए। *[NCERT]*
8. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है? *[NCERT]*
9. जैसे बादल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं, वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए। *[NCERT]*
10. 'उत्साह' कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।
11. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों? *[NCERT]*

# अट नहीं रही है

## पाठ-परिचय :

'अट नहीं रही है' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है। कवि फागुन की सर्वव्यापक सुंदरता को अनेक संदर्भों में देखता है। जब मन प्रसन्न हो तो हर तरफ़ फागुन का ही सौंदर्य और उल्लास दिखाई पड़ता है। सुंदर शब्दों के चयन एवं लय ने कविता को भी फागुन की ही तरह सुंदर एवं ललित बना दिया है।

## प्रतिपाद्य विषय

फागुन की आभा का मानवीकरण करते हुए निराला जी कहते हैं कि फागुन की शोभा सर्वव्यापक है। वह प्रकृति और तन-मन में समा नहीं पा रही है। उसका प्रभाव सभी पर देखा जा सकता है। फागुन में साँस लेते ही चारों ओर का वातावरण सुगंधित हो उठता है। मन उल्लास से भर उठता है। चारों ओर फागुन का सौंदर्य झलकता है। फागुन की सुगंधित मादकता व्यक्ति को कल्पना के पंख लगाकर गगन के विस्तार में उड़ने को उत्साहित करती है। कवि की आँखें फागुन की सुंदरता से अभिभूत हैं। अतः वह इससे अपनी नज़रें हटा नहीं पाता है। फागुन की सुंदरता की व्यापकता के दर्शन पेड़, पत्तों, फूलों आदि में हो रहे हैं। वृक्षों की डालियाँ हरे-हरे पत्तों से लदने लगी हैं। कहीं हरी तो कहीं लाल आभा प्रतिबिंबित हो रही है। हृदय पर धीमी-धीमी सुहासित पुष्पों की माला शोभायमान हो रही है। समस्त प्रकृति फल-फूलों से लद गई है और इसका प्रभाव लोगों के तन-मन पर भी देखा जा सकता है। सारा वातावरण पुष्पित व सुगंधित हो गया है। चारों ओर फागुन की शोभा झलक रही है। सृष्टि का कण-कण उत्साह व उमंग से भर गया है। फागुन की शोभा जगह-जगह छा गई है, वह समाए नहीं समाती। इस कविता में निराला जी फागुन के सौंदर्य में डूब गए हैं, उनमें फागुन की आभा रच गई है। ऐसी आभा, जिसे न शब्दों से अलग किया जा सकता है, न फागुन से।

### काव्य-सौंदर्य

- प्राकृतिक सौंदर्य का सजीव चित्रण है।
- माधुर्य गुण है।
- शृंगार रस है।
- कोमलकांत पदावली है।

Scanned with CamScanner

## समेटिव असेसमेंट

### काव्यबोध पर आधारित प्रश्न

**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**अट नहीं रही है**
**आभा फागुन की तन**
**सट नहीं रही है।**
**कहीं साँस लेते हो,**
**घर-घर भर देते हो**
**उड़ने को नभ में तुम**
**पर-पर कर देते हो,**
**आँख हटाता हूँ तो**
**हट नहीं रही है।**
**पत्तों से लदी डाल**
**कहीं हरी, कहीं लाल,**
**कहीं पड़ी है उर में**
**मंद-गंध-पुष्प-माल,**
**पाट-पाट शोभा-श्री**
**पट नहीं रही है।**

(क) प्रस्तुत काव्यांश में किसका चित्रण किया गया है?

(ख) कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों हट नहीं रही है?

(ग) 'साँस लेने' से कवि का क्या अभिप्राय है?

(घ) फागुन के साँस लेते ही वातावरण में क्या-क्या परिवर्तन आ जाता है?

(ङ) 'कहीं पड़ी है उर में, मंद-गंध-पुष्प-माल' से क्या तात्पर्य है?

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'साँस लेना' किस स्थिति का परिचायक है?
2. 'कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो' में अलंकार बताइए।
3. 'अट नहीं रही है' कविता का आधार क्या है?
4. प्रस्तुत कविता की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।
6. होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए। *[NCERT]*
7. छायावाद की एक खास विशेषता है– अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए। *[NCERT]*
8. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है? *[NCERT]*
9. फागुन में ऐसा क्या होता है, जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है? *[NCERT]*
10. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है? *[NCERT]*
11. 'अट नहीं रही है' कविता में किस मास और किस ऋतु का वर्णन किया गया है?

Scanned with CamScanner